Now Semester

BHARATHIDASAN UNIVERSITY, TIRUCHIRAPPALLI – 620 024

B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A – PART I – HINDI

(ANNUAL PATTERN)

CENTRE FOR DISTANCE EDUCATION

(For the candidates to be admitted from the academic year 2006-2007 onwards)

FIRST YEAR

PAPER I – PROSE, DRAMA, SHORT STORY, NOVEL AND GRAMMAR

Unit I Hindi Gadya Prabhakar

Ed : By Dr.Hiranmaya
Rajpal & Sons, Kashmiri Gate,
Delhi – 110 006.

Lessons prescribed :

(1) Album
(2) Mahatma Gandhi
(3) Budhapa
(4) Bharat Ek Hai
(5) Jeevan Ki Teen Pradhan Baton
(6) Japan Meen Kya Dekha

Unit II

Yuge Yuge Kranthi

By Vishnu Prabhakar
Rajpal & Sons, Kashmiri Gate
Delhi – 110 006.

Unit III

Kahani Vividha

Ed. By Dr.Devi Shankar Avasti
Raj Kamal Prakasan
Nethaji Subash Marg, New Delhi – 110 002.

Stories Prescribed :

(1) Jdgaah
(2) Urne Kaha Tha
(3) Thaaie
(4) Karva Ka Vrath
(5) Vapasi

Unit IV **Novel Badi Badi Ankhen**

By Upendranath Askh
Neelam Prakasan
Kusaro Bhag Road, Allahabad.

Unit V **Vyakaran Pradeep**

By Ram Dev Published by
Hindi Bhavan
63 Tagore Nagar
Allahabad – 2

Portions Prescribed

(1) Gender
(2) Number
(3) Case endings
(4) Pronoun
(5) Adjective
(6) Verb
(7) Tense
(8) Adverb
(9) Conjunction
(10) Interjection

Unit IV General Essays

Essay Prescribed:

1. Vidhyarthi Jeevan
2. Samaya Ka Sadupayog
3. Pusthakalaya
4. Sthiree Shiskha
5. Samachar Patra
6. Gram Sudhar
7. Thahege Pratha
8. Anivarya Sainik Shiksha
9. Pracheen Aur Naveen Sabyatha

Prescribed Book :

Nibandh Pravasika
Published by DBHP Sabha (Dakshina Bharat Hindi Pradhar Sabha)
T.Nagar, Chennai – 17.

Unit V

Modified Hindi Version of Chemmozhi Tamil

- - -

PAPER II – POETRY, HISTORY OF LITERATURE, GENERAL ESSAY AND HINDI VERSION OF CHEMMOZHI TAMIL

Unit I

Poetry : Kavya Saurab –
Published by Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha
T.Nagar, Chennai – 17.

Prescribed Poems:

1. Sachey Devathey – Ayothyaya Singh upadyaya Harioudh.
2. Ab hai Meri Baari – Sri Mythili Saran Gupta.
3. Joodey Pathey – Balakrishna Sharma Naveen.
4. Vasanth Aaya – Suryakanth Tripati Nirala.
5. Aavoo Phir se Ghav Banayeen – Seetha Sharan Varma.
6. Kabir Ke Dohe – All.
7. Tulsi Ke Dohe – All
8. Rahim Ke Dohe – All.

Unit II History of Hindi Literature

Aathikal and Bhakthi Kal (only – Gyanashrayi and Prem Margi Shaka).

Unit III History of Hindi Literature

Aathunik Kal

only Upanyas udbava Aur Vikas
Kahani udbava Aur Vikas
Natak udbava Aur Vikas

Reference Book for Unit II & III

Hindi Sahitya Ka Ithihas
by Babu Gulab Rai
Published by Lakshmi Narayan Agarwal Agra – 3

तमिल चेम्मोलि वरलारु

क्लासिकल तमिल भाषा का इतिहास

भूमिका

तमिल भाषा का साहित्य कम से कम २५०० वर्ष पुराना है । सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रंथ तोलकाप्पियम है । यह तमिल का व्याकरण है । तमिल साहित्य के तीन संघम हुए । अंतिम संघ का अनुपम ग्रंथ था 'तिरुक्कुरल' । पाँच महाकाव्यों में 'शिलप्पधिकारम' और 'मणिमेकलै' द्वारा हम तत्कालीन तमिल संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। काव्य वैभव में कंबन की रामायण, अत्यंत मौलिक है । भक्ति साहित्य उन्नत दशा में था । आळवारों और शैव संतों की कृतियों में 'नालायिर दिव्य प्रबंधम', 'देवारम' और 'तिरुवाचकम' आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं । तमिल की कवयित्रियों में आंडाल और अव्वैयार के नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

आधुनिक तमिल की भाषा शैली पर एक बात कहना यहाँ उचित होगा। पुराने तमिल विद्वान संस्कृत तथा तमिल भाषा पर समान रूप से काबू रखते थे । इसलिए वे अपने पांडित्य प्रदर्शन के लिये या पद लालित्य लाने के लिये दोनों भाषाओं के शब्दों को तमिल में प्रयोग में लाते थे । फलस्वरूप तमिल में संस्कृत शब्द बड़ी संख्या में आ गये । इस बढ़ती हुई बाढ़ को रोकने के लिए अब के विद्वान विशुद्ध तमिल का प्रचार कर रहे हैं ।

विद्वानों के मत:-

डा. सी.एन अण्णादुरै ने ९६७ में कहा या कि अन्य भाषाओं के आक्रमण से तमिल भाषा, कला, सभ्यता, संस्कृति को बचाना मुख्य लक्ष्य बन जाता है। उसके लिए अधिक काम करना पडता है । तमिल भाषा,

योग्यताएँ अधिक रखने के कारण यह क्लासिकल भाषा मानी जाती तमिल मीठी भाषा है । करन्दै तमिल संघं, चेन्नै विश्व विद्यालय के तमि पंडितों ने घोषणा की कि तमिल एक क्लासिकल भाषा साहित्य अकादमी वे उद्घाटन समारोह में १९५१ में **मौलना अबुल कलाम आज़ाद** ने स्पष्ट किय कि तमिल क्लासिकल भाषा होने के कारण उस भाषा के साहित्य को अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद करें तो अच्छा है । फिर **देवनेयप्पावाणर, डॉ. कुलन्दैसामी डॉ. अगस्त्यलिंगम, डॉ.जान सामुवेल श्री मणवै मुस्तफा** जैसे तमिल पंडितों ने स्पष्ट कि तमिल एक क्लासिक, भाषा है । कहा जाता है कि द्रविडभाषा का प्रयोग मोहंजदारों हराप्पा सभ्यता के काल में हुआ है। **अमेरिका के तमिल प्रोफसर डा.जार्ज एल्ल हार्ट** के अंग्रेजी निबन्धों ने लोगों का ध्यान आकर्षण किया । तमिलभाषा में ऐतिहासिकता, मानकीयता पौराणिकता, सक्रियता, स्वायत्तशासी (histricity, standaradity, ancient, features, vitality, autonomy) आदि गुण निहित हैं । संघकाल से लेकर आधुनिक काल तक तमिलभाषा का विकास विभिन्न पहलओं में हुआ है ।

अन्तर्राष्ट्रीय क्लासिकल भाषाएँ (ग्रीक, लटीन)

ग्रीक:- अट्ठारह वीं शताब्दी तक केवल ग्रीक तथा लटीन भाषाएँ क्लासिकल भाषाएँ मानी गयीं । **ग्रीक** भाषा में साक्रटीस, प्लेटो, अरिस्टाटिल जैसे दार्शनिक लोगों की रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण है । इलियठ, ओडिसी जैसे पौराणिक आदिकाव्य महत्वपूर्ण है ।

लटीन:- लटीन भाषा का प्रयोग अब नहीं रहा था । लेकिन आजकल की बोलचाल की भाषाएँ जैसी रुमानीयन, इटालियन, फ्रेन्च, स्पानिष, पोर्चुगीस भाषाओं के मूलकारण लटीन भाषा है । वर्जिल होरेस, प्रोपर्टियस, तिबुलस, आविड,

लिलि इस भाषा के प्रसिद्ध लेखक हैं । **लटीन** भाषा में बैबिल का अनुव हुआ है ।

आशिया / एशिया की क्लासिक भाषाएँ:- (हीब्रू, अरबी, फार्सी, चीन, जापा संस्कृत, पाली, तमिल)

हीब्रू:- हीब्रू मध्यपूर्वी देशों में इसभाषा का प्रयोग हुआ है । सेमटिक अरबी हीब्रू एक भाषा परिवार है। इस्रेल देश में हीब्रू राष्ट्रभाषा का रूप धार कर चुका है ।

अरबी:- कुरान अरबी भाषा में है । इस्लाम धर्म का आरंभ अरबी क्लासिक भाषा हो जाने का मूल कारण बन गया ।

फार्सी:- इसलाम धर्म के विकास तथा अरबी के भाषा कारण फार्सी भा का विकास हुआ । इस भाषा में गणित, दर्शन इतिहास आदि के विक अच्छी तरह हुए हैं ।

चीन:- चीन पश्चिम एशिया की प्रसिद्ध भाषा है । पुरातन तथा पौराणि भाषा है । इस भाषा के **लाओटस वन्ध कम्प्यूचिय** के दर्शन प्रसिद्ध हैं चीन भाषा पर भारतीय, फार्सी भाषाओं का प्रभाव अधिक है । वह एशिया की क्लासिकल भाषा है ।

जापानी:- चीन से संबंधित भाषा है । जापानी की **मन्योसु कृति** तम्मि के **संघम गीत** के समान है । साहित्यिक कृतियाँ जापानी में आधिक हैं चीन के अधीन में जापान अधिक काल रहने के कारण जापानी भाषा लिखित रूप चीनभाषा के लिखित रूप के समान है । संस्कृत पाली अ तमिल भारतीय क्लासिकल भाषाएँ है ।

भारतीय क्लासिक्ल भाषाएँ (सम्स्कृत पाली तमिल)

संस्कृतः- संस्कृत भारत की पहली क्लासिकल भाषा है । रामायण, महाभारत जैसे, महाकाव्य तथा वेद, ३६ प्रकार के पुराण, काव्य इस भाषा में लिखेगए । पाणिणी, पतञ्जली, वात्स्यायन भुर्तुहरि, कालिदास जैसे कवि इसी भाषा के हैं ।

पाली :- पाली भारत देश की प्राचीनतम भाषाओं में एक है । बौद्ध धर्म संबंधित रचनाएँ धम्मपदमल जरतककथाएँ, त्रिप्रिटकम आदि पाली में मिलती हैं । श्रीलंका की सिंहल भाषा का आदार पाली ही है ।

तमिलः- तमिल द्रविड परिवार की भाषा है । संस्कृत के सामान पौराणिक भाषा है । यह भाषा द्रविड परिवार की भाषाओं में एक है । तिरुक्कुरल चिलप्पदिकारम, तोलकाप्पियम कम्बररामायणम् जैसी रचनाएँ इसी भाषा में लिखी गई है । दुनिया की विभिन्न भाषाओं तथा संस्कृतियों के साथ इसका सम्बन्ध है । तमिल भाषा में ऐतिहासिकता historicity, मानकीयता standardity सक्रियता vitality स्वायतता autonomy आदि गुण मिलते हैं ।

तिरुवैयारु में आज भी तमिल तथा संस्कृत भाषाऐं **एल.के.जी** से **पी.एच.डी** तक सिखायी जाती हैं ।

तमिल भाषा की प्राचीनता:-

द्राविड भाषाएँ आर्य भाषाओं से भिन्न हैं । उत्तर भारत की भाषाओं का उद्भव संस्कृत से हुआ है । द्राविड भाषाओं की वैयाकरणिक बनावट संस्कृत से अलग है । तमिल भाषा की प्राचीनता शिला लेख, पुराने पैसे, मुहर तथा अक्षर सहित सांस्कृतिक टुकडे आदि के माध्यम से स्पष्ट होती है । आगे पुराने साहित्यक ग्रन्थ जैसे तोलकाप्पियम शिल्प्पदिकारम, मणिमेघलै,

चिंतामणी, वलयापती, कुण्डलकेशी, पतिनेनमेल कणक्कु रचनाएँ पतिनेनकील कणक्कु रचनाएँ, तिरुक्कुरल, कम्बरामायणम, नायन्मार तथा आलवार के पासुर आदि में भी निहित है । प्राचीन काल में तमिल ब्रम्मी लिपि में लिखी जा रही थी । तत्सम्बन्धी शिलालेख मदुरै के पास स्थित गुफाओं में लिखे गए। ये लिपियाँ सम्राट अशोक के शिला मे चित्रित लिपियों के समान है। ये संघकाल की तमिल लिपियाँ है । **मांगुलम** में राजा पांडियन नेडुञ्चेलियन, **जम्बै** नामक स्थान में राजा अतियमान नेडुमान अञ्ची, **प्रकलूर** नामक स्थान में चेरन इरुंपारै नामक राजा आदि लोगों ने शिलालेखों को बनवाया। संघकाल के तमिल लोग सोना, चाँदी, कांस में अंगूटी पहनते थे । विदेशों में आज भी **संघकाल** के तमिल लेख पैसे, मुहर अंगूठी मिलते हैं ।

तमिल द्राविड परिवार की प्राचीनतम भाषा है । यह इतनी प्राचीन है कि इसके हजारें शब्द संस्कृत भाषा में आये हैं । डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार कुछ ऐसे शब्द यों हैं । कुक्कुट (भुर्गा) कानन (जंगल) मर्कट (बंदर) मीन (मछली), कुंतल (बाल), वलय (कंकन) हेरंभ (भैंसा) आदि।

तमिल एक क्लासिकल भाषा है । क्लासिकल भाषा की योग्यताएँ तो पुरातनता तथा साहित्यिक बडरपन हैं । भारत में बोली जाती मुण्डाभाषा तो पुरातन भाषा है । लेकिन उसमें साहित्यक बडप्पन नहीं । लिपि भी नहीं। अंग्रेजी में साहित्य अनेक हैं । लेकिन उसमें तमिल या संस्कृत के समान पुरातन रूप नहीं है । संस्कृत के वेदों में द्राविड भाषा के शब्द मिश्रित है। भारत देश के उत्तर पश्चिम्, उत्तर पूर्वी प्रदेशों में आज भी द्राविड भाषाओं की संस्कृति द्राविड का प्रयोग हो रहा है । तमिल द्राविड परिवार की पुरातनतम भाषा है। **तोलकाप्पियम्** क्लासिकल तमिल भाषा का आधार ग्रन्थ है । साथ ही संघं साहित्य के पत्तुप्पाट्टु तथा एट्टुत्तैकै की रचनाएँ

पुरातनता को सिद्ध करती हैं। तमिल अपने लिए अलग साहित्यिक संप्रदा एवं विशेष वैयाकरणिक सम्प्रदाय रखती है । तिरुक्कुरल भक्ति रचना लोगों के हित के लिए लिखे गए ।

चेम्मोलि / क्लासिकल तमिल रचनाएँ

तोलकाप्पियम- १

एट्टुत्तोकै रचनाएँ ८

नट्रिणै, कुरुन्तोकै, ऐंगुरुनूरु, पदिट्टुप्पत्तु, परिपाडल, कलित्तोगै, अगनानूरु, पुरनानूरु,

पत्तुप्पाट्टु रचनाएँ-१८

तिरुमुरुगाट्टुप्पडै, पोरुनाट्टुप्पडै, सिरुपाणाट्टुप्पडै, पेरुम्पाणाट्टुप्पडै, मुल्लैप्पाट्टु, मदुरैक्काञ्चि नेडुनलवाडै, कुरिञ्चिपाट्टु, पट्टिनापालै, मलैपडुकडाम या नेञ्चाट्रुप्पडै

पदिनेन्कील कणक्कु रचनाएँ-१८

तिरुक्कुरल, नालडियार, नान्मणिक्कडिकै, इन्नानार्पतु, इनियवै नार्पतु, तिरिकडुकम, आचारक्कोवै, पलमोलि नानूरु, सिरुपञ्चमूलम, मुदुमोलिक्काञ्चि, एलादी, कार नार्पतु, कलवलिनार्पतु, ऐन्तिणै एलुपतु, तिणैमोलि ऐम्पदु, ऐन्तिणै ऐम्पतु, तिणैमालै नूट्रैम्पतु, कैन्निलै

सिलप्पतिकारं, मणिमेकलै, मुत्तोल्लाडरम, इरैयनार कलविय्यल । ४

कुल ४१

क्लासिक भाषा की योग्यताएँ तथा सीमाएँ:- विशेषज्ञों के अनुसार निम्न लिखित योग्यताएँ तथा सीमाएँ क्लासिक भाषाओं के लिए वर्णित गयी हैं जैसे- (१) पौराणिकता पुरातनता (ancient), २) विशेषता (speciality), ३) सामान्यता (common), ४) तटस्थता (natural), ५) प्रधानता (मातृत्व) (leader ship

productivity), (६) मानव का अनुभव (experience of people), (७) अन्यभाषाका दाखिल न रहना non-impact of other languages, (८) धर्मनिरपेक्षता secularism, दुनिया की सामान्यता में विशेषता देखने की चिंता (the idea to book into the speciality of common features of the world, १०) गद्य, संगीत, नाटक संम्बन्धी रचनाओं में नायक मनुष्य होना । (man is ruled as hero in works पुराने जमाने में हुए साहित्य तथा तमिल भाषा के सम्प्रदाय से बनाएगये सिद्धान्त से हुई रचना तोलकाप्पियम ।

उपसंहार

तमिल भाषा का साहित्य बहुत प्राचीन है । यह भाषा पत्थरोत्तर पर मिट्टी पूर्व जन्मी भाषा मानी जाती है । तमिल भाषा को भक्ति मार्ग के आलवारों ने भक्ति गीतों से समृद्ध बनाया । इस भाषा के पाँच महाकाव्य हैं । वे हैं शिलप्पधिकारम् मणिमेखलै, जीवकचिंतामणी, कुण्डलकेशी और वलैयापति । तमिल का तिरुक्कुरल चिश्व-वेद माना गया है । क्योंकि इसके रचयिता संत कवि तिरुवल्लुवर ने जाति, धर्म से परे अमूल्य विचार इस ग्रान्थ में प्रकट किये हैं । तमिलनाडु वास्तव में एक आध्यात्मिक स्थल है । तमिल भाषा सुसम्पन्न और समृद्ध भाषा है । इसलिए भारत सरकार ने इसे 'शास्त्रीय भाषा' घोषित किया है ।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

१. बा.चे. कुलन्दैसामी उलग चेव्वियल मोलिगलिन वरिसैइल तमिल

२. जी.जान सामुवेल चेम्मोलिगल वरिसैइल तमिल

३. चेम्मोलि उल्लुम पुरमुम मणवै पुस्फा अरिविपल तमिल अरक्कट्टलै चेन्नै

४. सालिनी इलन्तिरैयन, तमिल चेम्मोलि आवणम्, मणिवासकर पदिप्पकमे, चेन्नै-२००५

५. कालडवेल द्राविडमोलिगलिन ओप्पिलक्कणम कलग वेलिईडु चेन्नै ।

६. संघम ओविय उरै वरलारु तमिल चेम्मोलि संघं वेलिपीडु ५ लूर्दु नगर दूसरा स्ट्रीट कों पुतूर मदुरै-६२५ ००७.

Reference books

1. Va.che kulandaisami Ulaga Chevvial mozhigallu Varisaiyil Tamil
2. G. John Samavel, Chemmoligal varisaiyil Tamil
3. Chemmozhi Ullumpuramum Manavai Musthafa Ariviyal Tamil Arakkattalai, Chennai.
4. Salini Ilamthiraiyan, Tamil Chemmozhi Avanam Manivasagar Padippagam Chennai.
5. Kaldwel, Dravida Mozhigalin oppilakkanam kalaga veyee Chennai.
6. Tamil Chemmozhi Varalaru Sangam oviya urai sangam veliyadu. Lourdu Nagar, II Street, Madurai-625 007.

Bharathidasan University, Tiruchirappalli – 620 024.

B.A./B.Sc./B.Com./B.B.A. PART-I – SANSKRIT

(ANNUAL PATTERN)

(Centre for Distance Education Candidates only)

(Effect from the academic year 2011-2012 onwards)

I Year

Paper – I PROSE, POETRY, TEXTUAL GRAMMAR AND TRANSLATION

Prescribed Books :

1. Raghuvamsa of Kalidosa Canto – 2
2. Hitopadess – (Mitralabha) Story 1
3. Saral Sanskrit silkshak – Parts – I & II

Paper II : DRAMA, HISTORY OF CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE AND HISTORY OF CLASSICAL TAMIL LANGUAGE

1. **Drama:** Karnabharam of Bhasa
2. **History of Classical Sanskrit Literature**
3. **History of Classical Tamil Language**

Unit I & II: Karnabharam of Bhasa

Unit III: History of Classical Sanskrit Literature – Mahakavyas

Unit IV: History of Classical Sanskrit Literature continued Dramas of Bhasa, Kalidasa and Sudraka

History of Classical Sanskrit Literature continued – Dramas of Harshavardhana, Visakhadatta, Bhavabhuti and Bhattanarayana

Unit V: History of Classical Tamil Language

a. **Definition of Language**
b. **Language Family**
c. **Features of Classical Language**
d. **Classical Languages**
e. **Indian Classical Languages**
f. **Antiquity of Tamil Classical Texts**

Prescribed Texts

1. Karnabharam of Bhasa
   Published by: R.S. Vadhyar & Sons, Kalpatti, Palghat, Kerala

2. History of Sanskrit Literature by T.K. Ramachandran,
   Published by: R.S.Vadhyar & Sons, Kalpatti, Kerala

3. References for History of Tamil Classical Language:

1. பரிதிமாற்கலைஞர் (Suryanarayana Sastri) தமிழ்மொழி வரலாறு
2. சாலினி இளந்திரையன், தமிழ்ச்செம்மொழி ஆவணம், மணிவாசகர் பதிப்பகம், சென்னை 2005
3. கால்டுவெல், "திராவிடமொழிகளின் ஒப்பிலக்கணம்", சைவ சித்தாந்த நூற்பதிப்புக் கழகம் , சென்னை
4. தேவநேயப் பாவாணர், The Primary Classical Languages of the World

****